श्रीमद्भगवद्गीता B.A. Part I संस्कृत (सम्मान)

15-7 (जुलाई) -2020

श्लोकसंख्या - 17

"अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥"

हिन्दी अनुवाद - उसे (आत्मा को) तो तुम अविनाशी (अमर्त्य) जानो, जिसके द्वारा यह सकल संसार आच्छादित (व्याप्त) है। इस अव्यय (अमर आत्मा) को कोई नष्ट (समाप्त) नहीं कर सकता है।

(शाङ्करभाष्य से)

भावार्थ - अविनाशी से आशय है जिसका नष्ट न होने का भाव है। प्रस्तुत 'तु' शब्द सत् आत्मा की असत् पदार्थों से विभेद को व्यक्त करती है।

सकल घट-पट आदि आकाश से परिपूरित है। आकाश, ब्रह्म से आच्छादित है। अतएव आकाश में विद्यमान सर्वव्यापक तत्व ब्रह्म को अविनाशी कहा गया (माना गया) है।

अव्यय - का विग्रह - 'नास्ति व्ययो यस्य'।
अव्यय का आशय है - जिसमें किसी भी प्रकार की वृद्धि अथवा ह्रास न हो। ब्रह्म अव्यय है अर्थात् निरवयव होने से इसमें किसी प्रकार के विकार की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। विकार तो सावयव देह में संपन्न होते हैं।

ब्रह्म का कोई आत्मीय नहीं होता। अतएव ब्रह्म का किसी भी प्रकार से नाश सम्भव नहीं। इसप्रकार आत्मा का नाश कोई नहीं कर सकता। अपनी आत्मा में किसी भी प्रकार की क्रिया का सम्पादन नहीं होता। अतः आत्मा में भी वृद्धि अथवा ह्रास नहीं होता। इसप्रकार हमारी आत्मा ही ब्रह्म है।